छत्तीसगढ़ शासन

संस्कृति विभाग

वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन

2003–2004

रायपुर

2004

संस्कृति विभाग

विभाग का नाम	संस्कृति
प्रभारी मंत्री	श्री बृजमोहन अग्रवाल
अपर मुख्य सचिव	डॉ. के.के. चक्रवर्ती
उप सचिव	श्री जयसिंह म्हस्के

विभागाध्यक्ष

संचालक, संस्कृति एवं पुरातत्व	श्री प्रदीप पंत

विभाग के उद्देश्य

राज्य में कोई औपचारिक या विशेष नीति के स्थान पर राज्य की परम्पराओं-मान्यताओं का समावेश एवं उनके पोषण-सवंर्धन के लिए सांस्कृतिक उद्देश्यों की परिकल्पना पर वल देते हुए राज्य की सांस्कृतिक गतिविधियों को नया आयाम दिया जा रहा है।

राज्य, अभिलेखीय एवं गैर अभिलेखीय परंपराओं के आधार पर संस्कृति को परिभाषित करेगा। राज्य समुदायों के पारस्परिक संवंधो को वनाये रखने एवं उनके मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास करेगा, इसके अतिरिक्त सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों के छत्तीसगढ़ राज्य के साथ सांस्कृतिक संवंधों की नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की जायेगी।

राज्य की बोलियों को प्रोत्साहित किया जावेगा देश एवं विश्व की दूसरी बोलियों, समुदायों के मध्य संबंधों को प्रोत्साहित किया जायेगा। संस्कृति के ज्ञान का संचयन एवं उसका उपयोग समग्र रूप से एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखा जायेगा। राज्य में सांस्कृतिक गतिविधियों को वढ़ावा देने एवं फैली हुई विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं को एक सूत्र में वांधने हेतु एक अंतरसंकायी समिति का निर्माण किया जायेगा. जिसमें विभिन्न कलाओं एवं संकायों के उच्च स्तरीय विशेषज्ञों का समावेश होगा।

स्मारकों का संरक्षण संस्कृति नीति का विशिष्ट अंग होगा। राज्य को एक जीवंत संग्रहालय की नई परिकल्पना में रख कर विभिन्न समुदायों की संस्कृति का नये रूप में प्रस्तुतिकरण, नीति का एक प्रमुख भाग होगा। इसके अतिरिक्त समुदायों के जैविक- सांस्कृतिक तत्व तथा उनके मध्य परिवेशीय अंतरसंबंध को एक नया आयाम देते हुये यह प्रयास किया जावेगा। संस्कृति को संपूर्ण जीवन का आवश्यक अंग मानकर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन क्षेत्रीय कार्यक्रम, शोध-संगोष्ठी एवं विभिन्न उत्सवों के माध्यम से करना विभाग का ध्येय है।

क्रियाकलाप

संस्कृति विभाग का कार्य प्रदेश की संस्कृति, साहित्य एवं पुरातत्व का संवर्धन करना है तथा उसके उत्तरोत्तर विकास के लिये कार्य करत रहना है। विभाग के क्रियाकलाप मुख्यतः निम्नानुसार है-

- संस्कृति से संबंधित नीतिगत मामले व नीति निर्धारण कार्य।
- साहित्य एवं कला का विकास।
- सांस्कृतिक परम्परा का संरक्षण।
- ललित कला तथा लोक कला को प्रोत्साहन ।
- छत्तीसगढ़ राज्य की कला, संस्कृति, परम्पराओं एवं जनभाषाओं का संरक्षण, संवर्धन, प्रोत्साहन एवं देश विदेश में उसका प्रचार-प्रसार।
- अर्थाभावग्रस्त कलाकारों/साहित्यकारों को पेंशन व आर्थिक सहायता।
- अशासकीय सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रोत्साहन व आर्थिक सहायता।
- चयनित कलाकारों/साहित्यकारों/विद्वानों को सम्मानित करने का कार्य।
- कला, संस्कृति एवं ऐतिहासिक विषयों के दुर्लभ एवं प्रामाणिक ग्रंथों, दस्तावेजों, स्मृति चिन्हों का संग्रह, प्रकाशन, प्रदर्शन तथा संबंधित व्याख्यान, संगोष्टियों आदि का आयोजन।
- पुराने अभिलेखों का संरक्षण, संवर्धन ।
- ऐतिहासिक महत्व के स्मारकों का संरक्षण तथा संग्रहालयों का विकास।
- ऐतिहासिक स्मारकों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु प्रयास ।
- सिनेमा अधिनियम के तहत नये सिनेमागृहों को लायसेंस।
- शासकीय कार्य में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य ।
- शैक्षणिक संस्थाओं में हिन्दी भाषा का प्रयोग तथा उसके विकास संबंधी कार्य ।

कला एवं संस्कृति

प्रदेश की संस्कृति एवं साहित्य के संरक्षण व संवर्धन हेतु विभागीय नीति के अनुरूप कार्यक्रम तैयार कर गतिविधियों का संचालन विभाग द्वारा किया जाता है, जिससे समुदायों के बीच पारंपरिक संबंधों को बनाये रखने में, उन्हें विकसित करने में, उनके जीवन, उनकी कलाओं को उत्प्रेरित किया जा सके। स्थानीय समुदायों की अवाध सांस्कृतिक परम्पराओं की पहचान, मान्यता देना, पुनर्जीवित करना, दस्तावेजीकरण, प्रस्तुति एवं उनका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। साथ ही छत्तीसगढ़ के अद्वितीय सांस्कृतिक वैविध्य एवं विशिष्ट पहचान को परिभाषित कर, उसके सीमावर्ती पड़ोसी राज्यों तथा सांस्कृतिक प्रदेशों के साथ संबंध व विनिमय स्थापित किया जा रहा है। राज्य की समृद्ध जनजातीय परंपरा के संरक्षण एवं परिवर्धन हेतु विभिन्न कार्यक्रम, जिसमें जनजातीय रहन-सहन, तौर तरीके, रीति-रिवाज, लोक नृत्य, गायन एवं अन्य परंपराओं को बनाये रखने हेतु भी कार्य किया गया है। इस हेतु विभागीय क्रियाकलाप के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में कार्यरत स्वायत्तशासी एवं निजी क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं को आर्थिक सहायता दी गई है। राजभाषा एवं संस्कृति के अन्तर्गत सहयोगी गतिविधियों हेतु 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी सृजन पीठ' स्थापित है।

आयोजन एवं उत्सव –

राज्य नयी संस्थाओं/उत्सवों को प्रस्थापित करने के बजाय अस्तित्वमान पृष्ठभूमि वाले उत्सवों/संस्थाओं को प्रोत्साहित करता है, जिससे संस्कृति में अंतःसंकायी संवाद कायम रहे। इसी तारतम्य में विभाग द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गए/सहयोग प्रदान किया गया ।

- 25 अप्रैल 2003 को भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के 58वें अधिवेशन के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संयोजन किया गया।
- 25 अप्रैल से 1 मई 2003 तक छत्तीसगढ़ी फिल्म समारोह का आयोजन रायपुर भिलाई तथा बिलासपुर में किया गया। दिनांक 12 मई को प्रथम छत्तीसगढ़ राज्य फिल्म पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ी फिल्मों से संबंधित 20 पुरस्कार प्रदान किये गये।
- 9 से 25 मई 2003 तक 'आकार' पारंपरिक लोक शिल्प एवं लोक संगीत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बस्तर, रायगढ़ के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मृदा शिल्प, ढोकरा शिल्प, काष्ठ शिल्प के कलाकारों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया, तथा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक लोक संगीत

का प्रशिक्षण स्थानीय विशेषज्ञ द्वारा दिया गया। इसी क्रम में आकार के द्वितीय चरण में चित्रकला व नाट्य प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया।

- विलासा कला मंच व जिला प्रशासन बिलासपुर के सहयोग से बिलासपुर में बिलासा महोत्सव का आयोजन किया गया।
- राज्य के 25 स्थानों पर नाट्य शिविरों के आयोजन एवं नाटकों के मंचन हेतु अनुदान उपलब्ध कराया गया।
- रायपुर जिले में आयोजित 'सुरता' के अंतर्गत राज्य की कला, संस्कृति एवं परंपराओं की पहचान को चिरस्थाई बनाये रखने की दृष्टि से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु अनुदान उपलब्ध कराया गया।
- स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों की प्रस्तुति सुर-सुराज तथा डॉ. व्ही.एस. रामामूर्ति के निर्देशन में भरतनाट्यम का आयोजन।

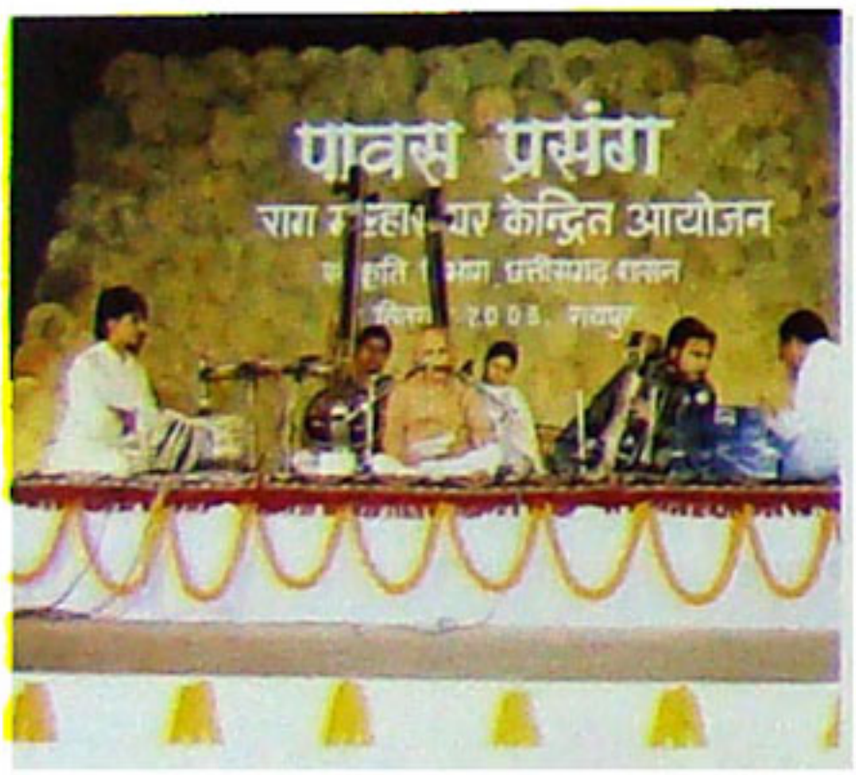

- शास्त्रीय संगीत पर आधारित संगीत संध्या 'पावस प्रसंग' का आयोजन किया गया, जिसमें प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीतज्ञों के अतिरिक्त राज्य के प्रसिद्ध संगीतज्ञों/कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गई।

- महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में मुक्तांकाश थियेटर का निर्माण व उस पर प्रथम सांस्कृतिक प्रस्तुति का आयोजन ।

- मंत्रालय के केबिनेट हाल में साज सज्जा हेतु लोक शिल्पियों को आमंत्रित कर कार्य सम्पन्न कराया गया।

- मुक्तांगन संग्रहालय के विकास कार्य हेतु लोक शिल्पियों को आमंत्रित कर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- छत्तीसगढ़ राज्य के तृतीय स्थापना दिवस पर 1 से 7 नवम्बर 2003 तक छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना समारोह आयोजित किया गया। इसमें प्रदेश के कलाकारों के अतिरिक्त पश्चिम बंगाल, आसाम, कर्नाटक तथा उड़ीसा के कलाकारों द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। दिनांक 19 नवम्बर 2003 को नई दिल्ली में राज्य दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन तथा दिनांक 19 एवं 20 नवम्बर को शांकुन्तलम थियेटर, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में छत्तीसगढ़ी फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

- छत्तीसगढ़ के पारंपरिक तथा लुप्तप्राय वाद्ययंत्रों के संकलन, संरक्षण, प्रचलन एवं प्रदर्शन कर राज्य की संगीत परंपरा को पुष्ट करते हुए लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से राज्य में तथा लालचौक थियेटर, नई दिल्ली में छत्तीसगढ़ के विशिष्ट वाद्ययंत्रों पर पारंपरिक धुनों की प्रस्तुति दी गई।

- आई.टी.सी. संगीत रिसर्च अकादमी, कोलकाता तथा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 18 से 22 दिसम्बर 2003 तक पांच-दिवसीय शास्त्रीय संगीत समारोह का आयोजन किया गया। इसी आयोजन में गायन एवं वाद्ययंत्रों पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई।

- चिकित्सकों की राष्ट्रीय कार्यशाला में सांस्कृतिक संध्या के अंतर्गत भरथरी, लोक नृत्य, पंथी नृत्य का आयोजन किया गया।

- गणतंत्र दिवस समारोह 2004 के अवसर पर विभिन्न विभागों/संस्थाओं द्वारा तैयार की गयी झांकियों के प्रदर्शन का समन्वयन किया गया। जिसका मुख्य विषय 'विकास का संकल्प' था, साथ ही अलग-अलग अंचलों की सांस्कृतिक विरासत की झलक छत्तीसगढ़ राज्य के लोक नर्तक दलों द्वारा आयोजित कर प्रस्तुति दी गयी । इसी अवसर पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसमें ऋतु श्रृंगार एवं छत्तीसगढ़ी अभिव्यक्ति की प्रस्तुति दी गई।

- 28 जनवरी 2004 को महामहिम राष्ट्रपति जी के रायपुर प्रवास पर राजभवन में सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई।

- राज्य के पारंपरिक एवं विशिष्ट उत्सवों यथा- जाज्वल्य उत्सव, जांजगीर, शिवरीनारायण उत्सव, चक्रधर समारोह, रायगढ़, भोरमदेव उत्सव, मल्हार उत्सव बिलासपुर, रामगढ़ उत्सव, सरगुजा, खल्लारी उत्सव, लोक मड़ई, राजनांदगांव के आयोजनों में उत्प्रेरक की भूमिका।

- श्री राजीवलोचन महोत्सव 2004 के आयोजन जनपद पंचायत, फिंगेश्वर तथा स्थानीय निकाय के सहयोग से किया गया, जिसमें विभाग द्वारा उत्प्रेरक की भूमिका अदा की गई ।

- श्री राजीवलोचन महोत्सव 2004 के अवसर पर चम्पारण्य में 'पंडवानी प्रसंग-2004' का आयोजन किया गया, जिसमें राज्य के प्रमुख पंडवानी कलाकारों का सम्मान भी किया गया।

- मोतीबाग, रायपुर में हस्तशिल्प एवं हाथकरघा प्रदर्शनी 'जगार' में 5 दिवसीय सांस्कृतिक संध्या का आयोजन।

- 23 फरवरी से 3 मार्च 2004 तक राष्ट्रीय कार्यशाला एवं शिल्प मेला का आयोजन।

- 25-26 फरवरी 2004 को विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन।

- राज्य की जन भाषाओं, परम्परा, कला व संस्कृति पर आधारित कार्यक्रम/ गोष्ठी आयोजन सभी 15 जिलों में कर रायपुर में राज्यस्तरीय संगोष्ठी का आयोजन।
- स्वामी विवेकानंद जी के रायपुर प्रवास के 125वीं वर्षगांठ पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

विभाग द्वारा सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने एवं छत्तीसगढ़ की कला एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से निम्नलिखित राज्यों में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई -

- 20, 21 सितम्बर 2003 को जमशेदपुर, झारखंड में छत्तीसगढ़ी लोकगीत, पंडवानी तथा पंथी नृत्य की प्रस्तुति की गई, उक्त आयोजन छत्तीसगढ़ी सांस्कृतिक समिति (सी. पी.एन. क्लब) जमशेदपुर के सहयोग से किया गया ।
- 25 सितम्बर 2003 को उत्तरांचल के देहरादून में छत्तीसगढ़ दिवस के रूप में आरक्षित कर विरासत 2003 में श्री भारती बंधु का भक्ति संगीत, अंतरराष्ट्रीय कलाकार सुश्री ऋतु वर्मा की पारंपरिक पंडवानी तथा श्री सुखदेव दास बंजारे ने राज्य की पारपंरिक कलाओं का प्रदर्शन किया ।
- जवाहर कला केन्द्र जयपुर राजस्थान द्वारा आयोजित 11 दिवसीय 'लोकरंग' समारोह में 14 से 16 अक्टूबर 2003 तक छत्तीसगढ़ की लोक कलाकारों रिखी क्षत्रिय द्वारा दुर्लभ वाद्यों के प्रदर्शन के अतिरिक्त भरथरी गायिका श्रीमती सुरूज बाई खांडे की प्रस्तुति तथा श्रीमती पुनम देवार एवं दीपक विराट द्वारा छत्तीसगढ़ नाट्य का मंचन हुआ ।
- लाल चौक थियेटर, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में पंडवानी तथा छत्तीसगढ़ी पारंपरिक लोक वाद्यों की संगीतमय प्रस्तुति तथा शांकुन्तलम थियेटर, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में छत्तीसगढ़ी फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।
- खण्डगिरि, भुवनेश्वर में आयोजित राष्ट्रीय खारवेल उत्सव में 2-3 फरवरी 2004 को भरथरी गायिका सुश्री रेखा जलक्षत्री की प्रस्तुति।

अनुदान एवं सहायता -

अस्तित्वमान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली संस्थाओं को वढ़ावा, शारीरिक तथा मानसिक चुनौतियों से जूझते लोगों को प्रोत्साहन तथा सुरक्षित जीवन-यापन के लिए अर्थाभावग्रस्त संस्कृति कर्मियों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए विभागीय पहल कर पूर्व प्रकरणों में कार्यवाही तथा नए प्रकरण तैयार कर सहायता के लिए निम्नानुसार कार्य किए गए -

- वर्ष के दौरान 21 अर्थाभावग्रस्त साहित्यकारों/कलाकारों को जिला पंचायतों के माध्यम से 700/- प्रतिमाह की दर से मासिक सहायता (पेंशन) स्वीकृत किया गया है।

- विभाग द्वारा कलाकार कल्याण कोष से भी 6 विभिन्न जरूरतमंद कलाकारों/ साहित्यकारों को 5,000 रू. के मान से वर्ष 2003-04 के दौरान राशि स्वीकृत की गई है।
- राज्य की संस्कृति, कला से जुड़ी 52 विभिन्न संस्थाओं/व्यक्तियों को विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों, कला के विकास हेतु अनुदान दिया गया।
- कलावीथिका के विकास से संवंधित 4 संस्थाओं/व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।
- साहित्यिक गोष्ठियों व साहित्य एवं अन्य सामाजिक कार्यों से जुड़े अन्य आयोजनों हेतु 23 संस्थाओं/व्यक्तियों को तथा साहित्य एवं कला से जुड़े प्रकाशनों हेतु 26 संस्था/व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।

अभिलेखन -

स्थानीय समुदायों की अवाध सांस्कृतिक परंपराओं की पहचान, दस्तावेजीकरण तथा गैर-अभिलेखीय परंपराओं को प्रोत्साहित करने हेतु निम्नानुसार प्रलेखन कार्य किए गए -

- 25 सितम्वर 2003 को बैगा जनविकास यात्रा में उत्प्रेरक की भूमिका।
- अक्टूवर 2003 में नाट्य कर्मियों की अभिलेखीय सामग्री का संकलन।
- छत्तीसगढ़ राज्य के वरिष्ठ साहित्यकार, लोक कलाकारों का साक्षात्कार।
- मृदा, काष्ठ एवं धातु शिल्पियों से साक्षात्कार कर अभिलेखन।

प्रकाशन -

सांस्कृतिक परंपराओं की प्रस्तुति एवं उनका प्रचार-प्रसार, सांस्कृतिक गतिविधियों की निरंतरता तथा जीवन्त प्रवाह मानकर विभिन्न प्रकाशन किए गए है -

- श्री राजीवलोचन महोत्सव 2004 के अवसर पर फोल्डर।
- बिहनिया का प्रकाशन।
- प्रतिवर्ष की तरह राज्योत्सव 2003 के अवसर पर ब्रोशर एवं गणतंत्र दिवस 2004 के अवसर पर विवरणिका, तथा लोक कलाओं एवं ललित कलाओं पर परिचयात्मक ब्रोशरों का प्रकाशन।

- साथ ही 5 संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकों के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है।
- महत्वपूर्ण अप्रकाशित प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपि 'राधा विनोद' एवं पुरातत्वीय महत्व के विभागीय पुस्तक 'उत्कीर्ण लेख' प्रकाशनाधीन।

गोष्ठियां -

अंतःसंकायी संवाद तथा स्थानीय समुदायों के सहनिर्देशित पहल से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करने के उद्देश्य से निम्नानुसार आयोजन किए गए -

- 12 अप्रैल 2003 को प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता एवं पुरातत्वविद् छत्तीसगढ़ के प्रो. स्व. शंकर तिवारी की पुण्यतिथि के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन।
- 16 मई 2003 को बुद्ध जयंती के अवसर पर महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय परिसर, रायपुर में बौद्ध चिंतन परंपरा एवं प्रासंगिकता पर संगोष्ठी।
- 17 नवम्बर 2003 को पं. लोचन प्रसाद पांडेय स्मृति संगोष्ठी का आयोजन।

- बख्शी सृजनपीठ के अंतर्गत स्व. श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की स्मृति आधारित कार्यक्रम के अतिरिक्त 8 दिवसीय हिन्दीतर भाषी हिन्दी नवलेखक शिविर तथा श्रीकांत वर्मा स्मृति पर्व का आयोजन किया गया।
- महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय कक्ष में राज्य की भाषा-बोली, कला एवं संस्कृति पर आधारित विभागीय साप्ताहिक गोष्ठी के क्रम में माह अगस्त 'छत्तीसगढ़ के लोक संगीत' विषय पर गोष्ठी का आयोजन। सितम्बर में 'वस्तर के घड़वा शिल्प' विषय पर गोष्ठियों का आयोजन। दिसम्बर में 'गुरू घासीदास का जीवन पर गोष्ठी का आयोजन। जनवरी 2004 में 'शास्त्रीय-राग परिचय', 'छेरछेरा एवं रामकोठी की परंपरा' एवं 'मुरिया घोटुल' पर गोष्ठी का आयोजन।
- साहित्यिक एवं सामाजिक गोष्ठियों/आयोजनों हेतु 27 संस्थाओं/व्यक्तियों को अनुदान दिया गया।

प्रदर्शनी -

सांस्कृतिक परंपराओं के प्रचार-प्रसार तथा मूल स्थान व निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शनों की संकल्पना को क्रियान्वित करने हेतु राज्य की परंपराओं तथा सांस्कृतिक व कलात्मक संपदा का निम्नानुसार प्रदर्शन जनजागरूकता के उद्देश्य से किया गया/कराया जा रहा है -

- महावीर जयंती के अवसर जैन धर्म व संस्कृति तथा बुद्ध जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ में बौद्ध परंपरा पर आधारित प्रदर्शनी।
- स्वामी विवेकानंद पर आधारित पुस्तकों की प्रदर्शनी।
- 15 अगस्त 2003 के अवसर पर सिक्कों की प्रदर्शनी।
- छत्तीसगढ़ के लोक शिल्प पर आधारित प्रदर्शनी।
- गुरू घासीदास जयंती के अवसर पर गुरू घासीदास पर आधारित फोटोग्राफ की प्रदर्शनी एवं वीडियो फिल्म का प्रदर्शन।
- गणतंत्र दिवस 2004 के अवसर पर स्वतंत्रता के जनजातीय स्वर पर आधारित प्रदर्शनी।
- श्री राजीव लोचन महोत्सव 2004 के अवसर पर पंचक्रोशी यात्रा एवं राजिम लोक शिल्पियों की अभिव्यक्ति का प्रदर्शन।

पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय

विभाग का एक मुख्य कार्य प्रदेश भर में विस्तृत पुरासंपदा का सर्वेक्षण, चिन्हांकन, छायांकन, संकलन, संरक्षण, प्रदर्शन, उत्खनन एवं अनुरक्षण करना है, साथ ही नये संग्रहालयों की स्थापना कर जन-सामान्य एवं शोधार्थियों में पुरातत्वीय संपदा के प्रति जागृति पैदा करना है। इसके अतिरिक्त स्मारकों के अनुरक्षण, महत्वपूर्ण प्रतिमाओं की प्रतिकृतियों का निर्माण, स्मारकों का संरक्षण, प्रदर्शन एवं संगोष्ठियों का आयोजन, आदिवासी लोककला संस्कृति एवं प्राचीन परम्पराओं का संरक्षण एवं संधारण, नवीन खोजों एवं उपलब्धियों का प्रकाशन मुख्य कार्य है। विभाग के अन्तर्गत प्रदेश में 3 स्थलों पर संग्रहालय हैं तथा 56 राज्य संरक्षित पुरातत्वीय स्मारक हैं। अभिलेखागार प्रभाग को पुरातत्व के अन्तर्गत स्थापित किया गया है, जिसमें ऐतिहासिक अभिलेखों को एकत्रित कर उसका संरक्षण एवं संवर्धन कार्य विभागीय उद्देश्यों में सम्मिलित है।

उत्खनन एवं सर्वेक्षण -

स्मारकों का मूल स्थान पर पुनरुद्धार तथा सांस्कृतिक एवं भौगोलिक भू-दृश्यों को सुरक्षित करने के उद्देश्य से उत्खनन व सर्वेक्षण कार्य कराया गया।

अ. उत्खनन – छत्तीसगढ़ राज्य में संचालनालय के अंतर्गत ग्राम सिरकट्टी, जिला रायपुर में मलबा सफाई कार्य करवाया गया। इसके अतिरिक्त ग्राम अमलीडीह, तहसील खैरागढ़, जिला राजनांदगांव स्थित टीलों तथा ग्राम गिधपुरी, तहसील बलौदा बाजार, जिला रायपुर के भग्नावशेषों के उत्खनन की अनुमति भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त हो चुकी है। उक्त क्षेत्रों में उत्खनन हेतु सर्वेक्षण व अन्य कार्यवाही प्रगति पर है।

ब. सर्वेक्षण – राज्य में फैली पुरासंपदा के सर्वेक्षण, अभिलेखन एवं संधारण की दृष्टि से वर्ष 2003-04 में निम्नलिखित सर्वेक्षण कार्य किया गया/प्रगति पर है -

- माढ़मसिल्ली बांध क्षेत्र का सर्वेक्षण।
- दुर्ग जिले के महापाषाणीय स्थलों का सर्वेक्षण ।
- पेन्ड्रा रोड (मरवाही तहसील) के ग्रामों का ग्रामवार पुरातत्वीय सर्वेक्षण ।
- बलौदाबाजार, जिला रायपुर का ग्रामवार पुरातत्वीय सर्वेक्षण ।
- कसडोल, जिला रायपुर का ग्रामवार पुरातत्वीय सर्वेक्षण ।
- तहसील सराईपाली, जिला महासमुंद का ग्रामवार पुरातत्वीय सर्वेक्षण ।
- तहसील भरतपुर, जिला कोरिया के ग्रामवार पुरातत्वीय सर्वेक्षण ।
- राज्य के बौद्ध तथा जैन स्थलों, स्मारक एवं प्रतिमाओं का सर्वेक्षण ।
- जिला जशपुर के वगीचा तहसील का सर्वेक्षण।

विभिन्न जिलों के इतिहास और पुरातत्वीय संपदा के संरक्षण हेतु राजनांदगांव, धमतरी, दंतेवाड़ा, जशपुर, महासमुंद, जांजगीर-चांपा, कोरिया, कांकेर, कवर्धा के जिला पुरातत्व संघों के माध्यम से तथा इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ को राशि उपलब्ध करा कर, उनके माध्यम से पुरातत्वीय सर्वेक्षण कार्य कराया जा रहा है।

अनुरक्षण एवं लघु निर्माण

स्मारको के संरक्षण के साथ साथ महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं भौगोलिक भूदृश्यों को सुरक्षित किये जाने हेतु वर्ष 2003-04 के दौरान निम्नलिखित स्थलों पर अनुरक्षण कार्य किये गये/प्रगति पर है -

- बारसुर स्थित बत्तीसा मंदिर का अनुरक्षण कार्य पूर्ण किया गया ।

- महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर की वाउन्ड्रीवाल में निर्मित पेंटिंग्स का रासायनिक उपचार कार्य।
- दुधावा बांध में स्थित देवखूंट मंदिर की प्रतिमाओं का डूब क्षेत्र से स्थानांतरण।
- ग्राम कुटेना, सिरकट्टी आश्रम के पास पैरी नदी में स्थित प्राचीन नदी बंदरगाह की मलवा सफाई एवं अनुरक्षण कार्य।
- चित्रकोट स्थित विशाल शिवलिंग के ऊपर छत बनाने का कार्य।
- ग्राम जोंगा, वस्तर क्षेत्र में स्थित मेगालिथिक स्थल के स्मारक-स्तंभ का अनुरक्षण कार्य।
- ग्राम वास्तानार क्षेत्र स्थित मेगालिथिक स्थल के स्मारक-स्तंभ का अनुरक्षण कार्य।
- ग्राम किलेपाल, वस्तर क्षेत्र में स्थित मेगालिथिक स्थल के स्मारक-स्तंभ का अनुरक्षण कार्य।
- संरक्षित स्मारक कपिलेश्वर मंदिर, वालोद, जिला दुर्ग का जीर्णोद्धार कार्य।
- संरक्षित स्मारक, सामत सरना समूह ग्राम डीपाडीह, जिला सरगुजा में पाथ-वे का निर्माण एवं बोर्ड लगाने का कार्य।
- संरक्षित स्मारक, सामत सरना समूह, ग्राम डीपाडीह, जिला सरगुजा में सुरक्षा दीवार का निर्माण कार्य।
- संरक्षित स्मारक आनन्दप्रभकुटी विहार एवं स्वास्तिक विहार, सिरपुर, जिला महासमुंद का वार्षिक साफ-सफाई कार्य।
- संरक्षित स्मारक सामत सरना समूह, ग्राम डीपाडीह, जिला सरगुजा का वार्षिक साफ-सफाई कार्य।
- संरक्षित स्मारक देवरानी जेठानी मंदिर, ताला, जिला बिलासपुर का वार्षिक साफ-सफाई कार्य।

- संरक्षित स्मारक शिव मंदिर घटियारी, ग्राम बिरखा, जिला राजनांदगांव में पहुंच मार्ग, फर्शीकरण, मूर्तियों का प्रदर्शन तथा वृक्षारोपण कार्य।

- महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय परिसर में शिल्प ग्राम में बाउन्ड्रीवाल का निर्माण, ट्विन फ्लावर तथा पेडस्टल का निर्माण, मुक्ताकाश थियेटर के पास लैण्ड स्केपिंग एवं वाटरफाल का निर्माण, फाउंटेन तथा लैण्ड स्केपिंग का निर्माण, शिल्पग्राम हेतु प्लेटफार्म का निर्माण कार्य, वाहन स्टेण्ड के सम्मुख सुरक्षा दीवाल एवं फर्शीकरण का कार्य किया गया।

रासायनिक संरक्षण कार्य -

पुरातत्वीय स्मारक एवं कलाकृतियों की साफ-सफाई, अधिक समय तक सुरक्षा प्रदान करने एवं प्राकृतिक क्षरण से संरक्षित करने की दृष्टि से वर्ष 2003-04 के दौरान निम्नलिखित स्थानों पर रासायनिक संरक्षण कार्य कराया गया/प्रगति पर है-

- महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय रायपुर परिसर, आंगन एवं दीर्घाओं में प्रदर्शित प्रस्तर प्रतिमाओं तथा शिलालेखों का रसायनिक संरक्षण कार्य।

- आनंदप्रभकुटी विहार, सिरपुर, जिला महासमुंद की प्राचीन ईंट निर्मित भित्तियों का रसायनिक संरक्षण।

- मेगालिथिक (स्मारक-स्तंभों) का दीमकरोधी उपचार कार्य।

- स्वास्तिक विहार, सिरपुर, जिला महासमुंद की प्राचीन ईंट निर्मित भित्तियों का रसायनिक संरक्षण।

फोटोग्राफी -

सांस्कृतिक परंपराओं के दस्तावेजीकरण के लिए स्मारकों, कलाकृतियों, उत्खनन, सर्वेक्षण में धरातल पर पड़े पुरासंपदा तथा संग्रहालयों में संग्रहित कलाकृतियों का छायांकन-प्रलेखन कार्य कराया गया है -

- मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ के प्राचीन शैलचित्रों की फोटोग्राफी एवं प्रदर्शनी हेतु फोटोग्राफ्स का इनलार्जमेंट तथा लेमिनेशन कार्य कराया गया।
- बस्तर संभाग के स्मारक-स्तंभों (मेगालिथिक) को संरक्षित करने हेतु फोटोग्राफी तथा विडियोग्राफी की गई।
- छत्तीसगढ़ राज्य के अंतर्गत संरक्षित महत्वपूर्ण स्मारकों के डाक्युमेंटेशन कार्य के छायाचित्रों का एलबम तैयार किया।

माडलिंग -

समुदायों के जैव-सांस्कृतिक, इतिहास और भौतिक परिवेशीय अन्तर्संबंध के संदर्भों को महत्व देते हुए विभागीय माडलिंग शाखा के अन्तर्गत जनसामान्य में सांस्कृतिक धरोहर के प्रति रूचि जागृत करने के उद्देश्य से प्रदेश की चुनी हुई महत्वपूर्ण प्रतिमाओं की प्रतिकृतियां प्लास्टर ऑफ पेरिस एवं फाइवर ग्लास से विभागीय स्तर पर तैयार की जाती है। वर्ष 2003-04 के दौरान निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप गणेश की छोटी प्रतिमा, वज्रपाणि प्रतिमा की प्रतिकृति तथा चंवरधारिणी प्रतिमा की प्रतिकृति तैयार की गई। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला 'आकार' में प्रशिक्षणार्थीयों को प्लास्टर कास्ट की प्रतिकृतियां तैयार करने मोल्ड वनाने का पूर्ण प्रशिक्षण दिया गया। छत्तीसगढ़ के पारंपरिक वाद्ययंत्रों के खुले में प्रदर्शन हेतु फाइवर ग्लास में उनके माडल तैयार किए गए।

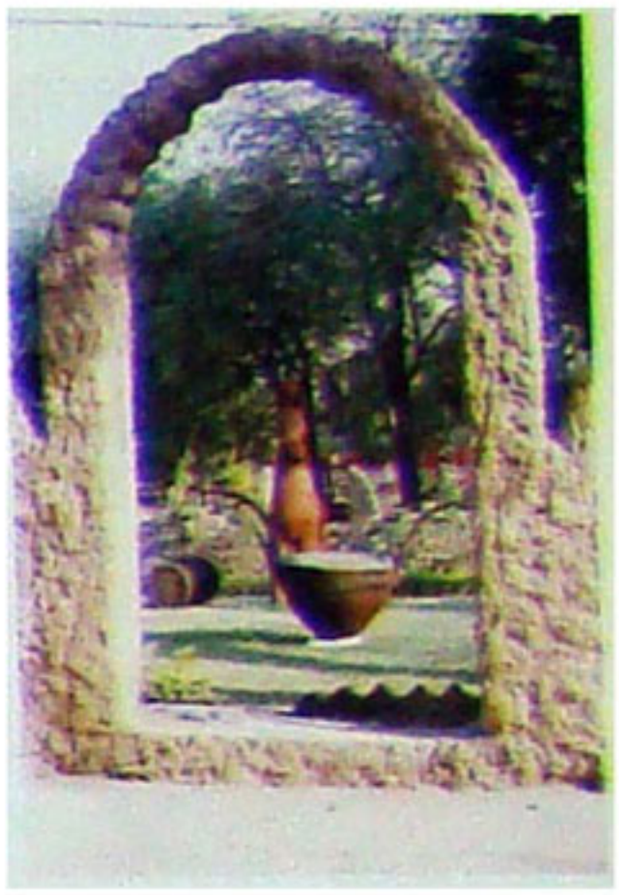

संग्रहालय -

मूर्त वस्तुओं का संकलन और निर्धारित स्थानों पर प्रदर्शन करने के लिए राज्य में विभाग के तीन संग्रहालय रायपुर, जगदलपुर एवं विलासपुर में विद्यमान है। रायपुर स्थित महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय के प्रति विशेष जन-आकर्षण हेतु उसका निरंतर सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। संग्रहालय परिसर स्थित मुक्ताकाश थियेटर का निर्माण कार्य पूर्णता की ओर है। परिसर में वृक्षारोपण तथा वगीचे का विकास किया जा रहा है। वर्ष के दौरान कर्मचारियों के बैठने हेतु वर्तमान भवन का विस्तार भी किया गया। परिसर में स्थित सुरतावा के सौंदर्यीकरण हेतु संलग्न भूमि में लघु उद्यान का विकास व पेडेस्टल का निर्माण भी कराया गया है। इसके अतिरिक्त जिला पुरातत्व संघों द्वारा संचालित संग्रहालय हेतु कलाकृतियों के संकलन एवं उनके प्रदर्शन व्यवस्था हेतु विभाग द्वारा अनुदान स्वीकृत किया गया है।

अनुदान -

संस्थागत समन्वय तथा विकेन्द्रित मैदानी गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हुए राज्य के विभिन्न जिलों में यत्र-तत्र बिखरी पुरातत्वीय संपदा के संकलन, संरक्षण एवं उनके प्रदर्शन हेतु जिला पुरातत्व संघों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है। वर्ष 2003-04 के दौरान जिला पुरातत्व संघ, राजनांदगांव को सर्वेक्षण एवं मूर्तियों के प्रदर्शन हेतु अनुदान प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त जिला दुर्ग, जगदलपुर तथा दंतेवाड़ा के जिला पुरातत्व संघो को पुरातत्वीय महत्व की गोष्ठी व सेमीनार आयोजित करने हेतु वंटन उपलब्ध कराया गया। जिला पुरातत्व संघ जांजगीर-चांपा को भी अनुदान प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य जिलों में जिला पुरातत्व संघ को सक्रिय करने हेतु भी निरंतर प्रयास किये जा रहे है ।

पुरातत्वीय गोष्ठी -

महंत सर्वेश्वरदास ग्रंथालय कक्ष में राज्य की भाषा-बोली, कला एवं संस्कृति पर आधारित विभागीय साप्ताहिक गोष्ठी के क्रम में माह जून में 'प्रतिमाओं का रासायनिक संरक्षण' विषय पर गोष्ठी, जुलाई में प्राचीन प्रतिमाओं का विकास तथा शैव एवं वैष्णव प्रतिमाओं के लक्षण, 'छत्तीसगढ़ विदर्भ संबंध एक सर्वेक्षण' गोष्ठी, नर्मदा घाटी का उत्खनन विषय पर गोष्ठियों का आयोजन। अगस्त में 'पुरातत्वीय उत्खनन विज्ञान तथा तकनीक', स्मारकों का जीर्णोद्धार अभिलेखागार में अभिलेखों की क्षति एवं संरक्षण' तथा सितम्बर में भारतीय पुरातत्व

सर्वेक्षण विभाग द्वारा हाल के वर्षों में खोजे गए बुद्ध स्मारक एवं 'बस्तर की वाचिक परंपरा'। नवम्बर में 'पुरातत्वीय उत्खनन सिरपुर : 2003' पर गोष्ठी का आयोजन। दिसम्बर में 'युग-युगीन कोणार्क' एवं 'पुरातत्वीय प्रतिमाओं का प्लास्टर कास्ट प्रतिकृति निर्माण' पर गोष्ठी का आयोजन। फरवरी 2004 में 'सिरपुर का ऐतिहासिक परिदृश्य' पर गोष्ठी का आयोजन। पड़ोसी राज्यों के साथ छत्तीसगढ़ के पुरातत्वीय अंतरसंबंध पर केन्द्रित अंतरराज्यीय संगोष्ठी के आयोजन की योजना भी तैयार की गई है।

अभिलेखागार प्रभाग -

- भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग का 58वें अधिवेशन रायपुर में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया ।

- राज्य के समस्त जिलों से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अभिलेखों को छांटकर रायपुर अभिलेखागार में लाने के प्रयास किए जा रहे हैं।
- पूर्ववर्ती मध्यप्रदेश शासन से छत्तीसगढ़ की प्राचीन रियासतों से संबंधित मूल अभिलेख प्राप्त न होने की स्थिति में अभिलेखों की छायाप्रतियां करवाई जा रही है। वर्ष के दौरान छत्तीसगढ़ डिवीजन वांड व्हाल्यूम 1854, 1855 पार्ट 1 एवं पार्ट 2 की छाया प्रतियां लाई गई है ।

जनभागीदारी -

राज्य के विस्तृत क्षेत्र तथा व्यापक पुरातत्वीय धरोहर की सुरक्षा तथा पुरासंपदा के प्रति जनजागरूकता पैदा करने के लिए जनभागीदारी की आवश्यकता की दृष्टि से विभिन्न जिलों में जिला पुरातत्व संघों के गठन हेतु विशेष प्रयास किये गये हैं। वर्तमान में राज्य के 11 जिलों में जिला पुरातत्व संघों का गठन हो चुका है और शेष की कार्यवाही प्रगति पर है। इसके साथ ही राज्य की बिखरी हुई पुरातत्वीय धरोहर की सुरक्षा, संरक्षण की दृष्टि से व जन-सामान्य में पुरासंपदा के प्रति जागरूकता पैदा करने की दृष्टि से ग्राम स्तर पर भी ग्राम धरोहर समितियों के गठन के संबंध में भी सार्थक प्रयास किए गए हैं।

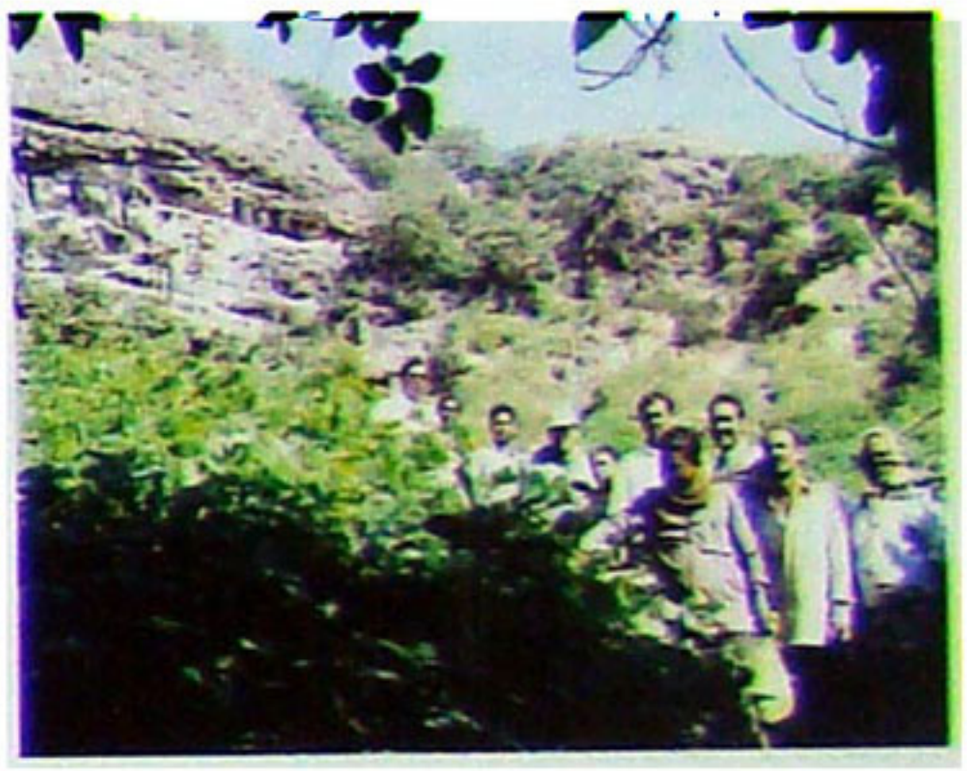

11वां वित्त आयोग -

11 वें वित्त आयोग (2000-01 से 2004-05) के अंतर्गत विभाग को पुरातत्व संरक्षण एवं ग्रंथालय विकास योजना दो योजनाएं स्वीकृत की गई है। इसके अंतर्गत पुरातत्व संरक्षण हेतु राज्य में फैली पुरातत्वीय महत्व की संपदा/स्मारकों को संरक्षित रखने एवं उनका संवर्धन करने की विस्तृत योजना है। राज्य के सभी 16 जिलों में जिला पुस्तकालय के उन्नयन हेतु 3.20 करोड़ की योजना एवं पुरातत्व संरक्षण हेतु 2.61 करोड़ की योजना अनुमोदित की जा चुकी है। वर्ष के दौरान 11वें वित्त आयोग की राशि से बत्तीसा मंदिर बारसूर जिला दंतेवाड़ा के अतिरिक्त कपिलेश्वर मंदिर समूह बालोद का संरक्षण कार्य किया गया है। राज्य स्तरीय ग्रंथालय (ई-लाईब्रेरी) योजना पूर्ण की जा चुकी है। जिलों की ग्रंथालय योजना वर्ष के दौरान शासन के आदेश द्वारा उच्च शिक्षा विभाग को स्थानांतरित कर दी गई है।

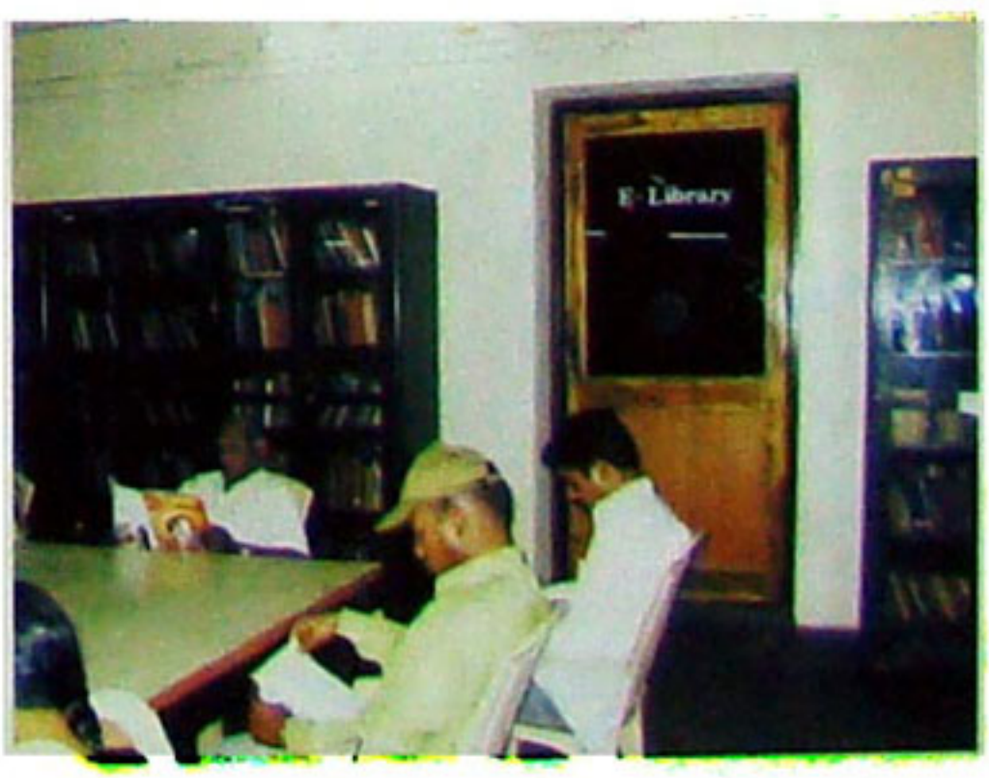

रायपुर संग्रहालय परिसर में स्थित महंत सर्वेश्वरदास सार्वजनिक पुस्तकालय को एक नया रूप प्रदाय करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास किये गए है। पुस्तकालय में बैठक व्यवस्था व बेहतर सुविधाएं देने के अतिरिक्त कला, साहित्य, पुरातत्व व अन्य विषयों की नई पुस्तकें क्रय की गई है। साथ ही उक्त ग्रंथालय को ई-लाईब्रेरी बनाने की दिशा में प्रयास किए गए हैं।

छत्तीसगढ़ बहुआयामी संस्कृति संस्थान -

छत्तीसगढ़ वहुआयामी संस्कृति संस्थान राज्य के समस्त प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रदर्शन, संकलन, कार्यशाला आदि के प्रत्यक्ष आयोजन से संबंधित रूपरेखा है, जिसमें जनजातीय कलाओं के स्वप्रेरित प्रदर्शन, संकलन एवं आत्मनिर्भरता की ओर प्रेरित किया जाएगा। इसमें शिल्प, नृत्य, संगीत, वाद्य, लोक देवी-देवता, वानस्पतिक औषधियां, वालकों में ज्ञान-विज्ञान को परिमार्जित करने तथा शोधार्थियों को सामग्री सहज में उपलब्ध कराने हेतु उन्नत तकनीकी सुविधाओं की व्यवस्था भी रहेगी। बहुआयामी संस्कृति संस्थान का माह सितम्बर 2002 में पंजीयन के उपरांत इसकी तीन परिषदों छत्तीसगढ़ साहित्य परिषद, छत्तीसगढ़ कला परिषद तथा छत्तीसगढ़ लोक परिषद में सदस्यों के मनोनयन की कार्यवाही पूर्णता की ओर है ।

मुक्तांगन संग्रहालय -

छत्तीसगढ़ की समृद्ध संस्कृति का आधार, जनजातीय समूहों की जीवन शैली, शिल्प उनके विश्वास और अवधारणाएं है। समाज की समुचित और समग्र उन्नति की दृष्टि से 'पुरखौती मुक्तांगन' नामक एक खुले परिसर की योजना वनाई है। इस योजना के लिए रायपुर से 20 कि.मी. दूर ग्राम उपरवारा व इससे संलग्न वृक्षारोपण क्षेत्र में जैव सांस्कृतिक विविधता का प्रदर्शन वन विभाग के सहयोग से प्रस्तावित है। इस परियोजना के समाविष्ट लक्ष्य में सांस्कृतिक जागरूकता और जैव सांस्कृतिक वैविध्य का संरक्षण, पारम्परिक ज्ञान पद्धति का आधुनिक विकास आवश्यकताओं के साथ तादात्म्य और प्रदर्शन होगा। छत्तीसगढ़ की जैव परिवेशीय और सांस्कृतिक स्थितियों को अनुभूत और दृश्यमान संस्कृति के रूप में जीवंत प्रदर्शन होगा। वर्ष के दौरान निजी भूमि का अधिग्रहण किया गया तथा संग्रहालय परिसर के विकास हेतु वांकुरा, पश्चिम वंगाल, राजस्थान के मृदा शिल्पी, कर्नाटक के वीदरी कला शिल्प, उड़ीसा के पट्ट चित्र के साथ उत्तर पूर्वी क्षेत्र के वांस शिल्पियों के साथ-साथ राज्य के रजवार कलाकार काष्ट शिल्पियों एवं घड़वा शिल्पियों की कार्यशाला आयोजित की गई। मुक्तांगन निर्माण हेतु निरंतर शिल्पियों की कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है।

पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय बजट प्रावधान की जानकारी

वित्तीय वर्ष 2003-04 के लिए

क.	योजना का नाम	आयोजनेत्तर	आयोजना	योग
1	2	3	4	5
लेखा शीर्ष - 2205			(आंकड़े लाख रूपयों में)	
1	103 - पुरातत्व	80.40	85.01	165.41
2	104 - अभिलेखागार	9.71	7.50	17.21
3	105 - सार्वजनिक पुस्तकालय	-	15.00	15.00
4	107 - संग्रहालय	34.02	114.00	148.02
	योग	**124.13**	**221.51**	**345.64**

क.	योजना का नाम	आयोजनेत्तर	आयोजना	योग
1	2	3	4	5
लेखा शीर्ष - 2202 -2205-3454			(आंकड़े लाख रूपयों में)	
1	2202 आधुनिक भारतीय भाषा (102) और साहित्य का संवर्धन	20.40	3.00	23.40
2	2205 कला और संस्कृति 101 ललित कलाओं की शिक्षा	1.70	100.00	101.70
3	102 कला और संस्कृति का संवर्धन	68.50	-	68.50
4	(800) अन्य व्यय	00.90	66.50	64.70
5	3454 जनगाणना सर्वे एवं सांख्यिकी (110) गजेटियर	-	11.79	11.79
	योग	**91.50**	**181.29**	**272.79**

मांग संख्या 41 आदिवासी उप योजना 2205 - कला एवं संस्कृति

1	107 संग्रहालय	-	50.00	50.00

वर्तमान में संचालनालय में कार्यरत अमले का विवरण

कमांक	कार्यालय का नाम	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	चतुर्थ श्रेणी	योग
1	पुरातत्व, अभिलेखागार, संग्रहालय, राजभाषा एवं संस्कृति	9	2	45	29	85
	योग	**9**	**2**	**45**	**29**	**85**

संचालनालय, संस्कृति एवं पुरातत्व की अनुमोदित पद संरचना

क्र.	पद नाम	वेतनमान	शासन द्वारा स्वीकृत पद	भरे पद	रिक्त पद
1	2	3	4	5	6
1	संचालक - प्रथम श्रेणी	अखिल भारतीय सेवा	1	1	-
2	संयुक्त संचालक-प्रथम श्रेणी	12000-16500	2	2	-
3	उपसंचालक-प्रथम श्रेणी	10000-15200	6	6	-
4	सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी	8000-13500	1	-	1
5	सहा. संचालक-द्वितीय श्रेणी	6500-10500	1	-	1
6	प्रकाशन अधिकारी	8000-13500	1	-	1
7	मुद्राशास्त्री	8000-13500	1	-	1
8	पुरातत्ववेत्ता	8000-13500	2	1	1
9	ग्रंथपाल	8000-13500	1	-	1
10	सहायक यंत्री	8000-13500	1	-	1
11	मुख्य रसायनज्ञ	8000-13500	1	-	1
12	पुरातत्वीय अधिकारी	8000-13500	1	-	1
13	पुरालेख अधिकारी	8000-13500	1	-	1
14	पुरालेखवेत्ता	8000-13500	1	-	1
15	संग्रहाध्यक्ष	8000-13500	3	-	3
16	लेखाधिकारी	8000-13500	1	1	-
17	संरक्षण अधिकारी	6500-10500	1	-	1

1	2	3	4	5	6
18	सहा.पुरालेख अधि.तृतीय श्रेणी	5500-9000	1	1	-
19	अधीक्षक	5500-9000	1	1	-
20	अनुदेशक	5500-9000	2	2	-
21	कनिष्ठ लेखाधिकारी	5000-8000	1	-	1
22	सहायक अधीक्षक	5000-8000	1	1	-
23	सहायक ग्रंथपाल	5000-8000	2	1	1
24	सहायक प्रोग्रामर	5000-8000	1	-	1
25	उपयंत्री	5000-8000	3	2	1
26	मान चित्रकार	5000-8000	2	1	1
27	कलाकार	5000-8000	2	1	1
28	रसायनज्ञ	5000-8000	2	2	-
29	शोध सहायक	5000-8000	2	1	1
30	सहायक वर्ग 1	4500-7000	1	1	-
31	तकनीकी सहायक	4500-7000	2	1	1
32	सहायक पुरालेखपाल	4500-7000	1	-	1
33	सहायक कलाकार	4500-7000	2	2	-
34	सहायक रसायनज्ञ	4500-7000	2	1	1
35	उत्खनन सहायक	4500-7000	3	1	2
36	अनुवादक	4500-7000	2	-	2
37	सहायक वर्ग - 2	4000-6000	12	10	2
38	स्टेनो ग्राफर	4000-6000	3	1	2
39	विडीयोग्राफर/छायाचित्रकार	4000-6000	1	-	1
40	पर्यवेक्षक	4000-6000	1	-	1
41	सर्वेयर	4000-6000	3	-	3
42	डाटा एन्ट्री ऑपरेटर	3500-5200	8	-	8
43	मार्ग दर्शक / गाईड	3500-5200	3	2	1
44	स्टेनों टायपिस्ट	3050-4590	5	2	3
45	सहायक ग्रेड-3	3050-4590	17	10	7

1	2	3	4	5	6
46	वाहन चालक	3050-4590	3	1	2
47	मोल्डर/सेल्समेन	3050-4590	2	-	2
48	बाईन्डर	3050-4590	1	-	1
49	भृत्य	2550-3200	25	25	-
50	चौकीदार	2550-3200	3	3	-
51	चौकीदार	जिलाध्यक्ष दर	1	-	1
52	फर्राश (अंशकालीन)	जिलाध्यक्ष दर	1	-	1
53	केयर टेकर	जिलाध्यक्ष दर	12	-	12
	योग		**160**	**85**	**75**